International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 332-335

माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का भौगोलिक चरों के साथ सहसंबन्ध का अध्ययन

अजायब सिंह
शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, भारत।

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अनुसंधान है जिसे सर्वेक्षण विधि द्वारा पानीपत जिले की माध्यामिक विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों का चयन याद्च्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था जो क्षेत्र व लिंग के आधार पर आधे–आधे थे। सांवेगिक बुद्धिमत्ता का भौगोलिक चरों के साथ सहसंबन्ध के अध्ययन हेतु अनुकूल हेडे, संजय पेथे और उपिंदर धार द्वारा प्रतिपादित और निर्मित "इमोशनल इंटेलीजेन्स प्रश्नावली" का मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया था। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और सह संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया गया था। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता में लिंग और स्थानीयता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही होता है और दोनों के स्तर एक समान है।

मूल शब्द : माध्यमिक विद्यालय, संवेगात्मक बुद्धि, भौगोलिक चर आदि।

प्रस्तावना
मानव विकास में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान आदिकाल से हो रहा है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास करने का प्रयत्न किया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में शिक्षा द्वारा भारतीय जनतंत्र के लिए सुयोग्य नागरिकों को तैयार करने की दृष्टि से अनेक परिवर्तनों की रूपरेखा तैयार की गई है। अनेक आयोगों का गठन शिक्षा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन के लिए तथा अनेक निवारणार्थ किया गया। सभी आयोगों के गहन अध्ययन के पश्चात् अपने सुझाव प्रस्तुत किये किन्तु उन सुझावों को क्रियान्वित नहीं किया जा सका, यह दुर्भाग्य का विषय है। शिक्षा को लेकर प्रतिदिन आलोचनाएँ कही और सुनी जाती है। दिन प्रतिदिन गिरता हुआ शिक्षा का स्तर निश्चित रूप से चिन्ता का विषय है। शिक्षा ही एक मात्र साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वागींण विकास किया जा सकता है किसी भी देश की सर्वतोन्मुखी प्रगति वहाँ की शिक्षा पर निर्भर करती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाया जाये जिससे परीक्षा द्वारा वांछित उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकें। भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालय के अध्ययन कक्षों में हो रहा है। आधुनिक युग में जीवन की समृद्धि, कल्याण और सुरक्षा का मापदण्ड शिक्षा ही है। हमारे विद्यालयों से निकलने वाले छात्रों के गुणों के आधार पर ही राष्ट्र का निर्माण सम्भव है इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तनों की आवश्यकता है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा के सम्पूर्ण कार्यक्रम का पुर्नमूल्यांकन किया जाये, गम्भीरतापूर्वक प्रत्येक क्षेत्र का सोच–समझ का अनुशीलन किया जाये जिससे शिक्षा द्वारा वांछित उपलब्धियों को प्राप्त करके शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठाया जा सके।

प्रारम्भ मे संवेगात्मक बुद्धि को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों मे अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु संवेगो का उपयोग करने वाली संज्ञानात्मक योग्यताओं का समूह माना जाता था। किन्तु वर्तमान मे संवेगात्मक बुद्धि को अपने एवं दूसरों के संवेगों को पहचानने, परिवर्तित करने, नियन्त्रित करने, प्रबन्धित करने एवं उन्हे प्रेरित करने का कार्य करने के रूप मे प्रकट किया जाता है। सिंह, एस0पी0 एण्ड रजनी (2016) ने अपने अध्ययन ''ए रिव्यू ऑफ इमोनशनल इन्टेलिजेन्स ऑन सेल्फ एस्टिमः इटस इम्पैक्ट ऑन एडोलसेन्ट स्टेज'' किशोरो की सांवेगिक बुद्धिमता तथा आत्म सम्मान सम्बन्धी कारकों का शोधकार्य किया तथा किशोरावस्था पर इनके प्रभावों की जॉच की। निष्कर्ष में पाया गया किः–1.सांवेगिक बुद्धि एवं आत्म सम्मान लोगो में सहसबन्ध होता है। 2.सांवेगिक बुद्धि एवं आत्म सम्मान लोगो की सामाजिक एवं संवेगात्मक अनुकूलता के आधार होते है। डिम्पल रानी (2014) ने अपने अध्ययन में छात्र अध्यापकों के शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धिमता के साथ सम्बन्ध की जॉच की। इस शोध कार्य के निष्कर्ष बताते है किः– 1.महिला एवं पुरूष छात्राध्यापकों के शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक बुद्धिमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 2.छात्रों के संवेगात्मक बुद्धिमता तथा शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया। एम0 गुनकेल (2014) ने अपने शोध कार्य कल्परस इन्फलूएन्स ऑन ईमोनशनल इन्टेलिजेन्स एवं स्टडी ऑफ नाईन कन्टरीज में निष्कर्ष निकाला कि सामूहिकतावाद, अनिश्चतता, परिहार, लम्बी अवधि की अनूकूलन का संवेगात्मक बुद्धिमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भण्डारकर (2013) ने अपने अध्ययन मे जूनियर कॉलेज के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमता का उनके लिंग, संकाय तथा रिहायशी स्थान के साथ सम्बन्ध की जॉच की। इस शोध कार्य की मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार रहेः– 1.ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष एवं महिला छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमता में सार्थक अन्तर पाया गया। 2. कला एवं विज्ञान संकाय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमता में भी सार्थक अन्तर पाया गया। 3. शहरी क्षेत्र के पुरूष एवं महिला छात्राओं के सांवेगिक बुद्धिमता में सार्थक अन्तर नही पाया गया। 4. कला एवं कॉमर्स संकाय के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धिमता में कोई अन्तर नही पाया गया। शबाना एवं रानी (2013) ने अपने शोध कार्य में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धिमता के आधार पर अध्ययन किया। इस शोध कार्य के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैः–1. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धिमता वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 2. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के सन्दर्भ में उच्च एवं निम्न

जागरूकता वाले छात्रों में कोई अन्तर ही पाया गया। 3. उच्च एवं निम्न व्यक्तिगत प्रबन्धन तथ अन्तः व्यक्तिगत प्रबन्धन के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। उमादेवी (2013) ने अपने शोध कार्य में किशोर बालकों के संवेगात्मक बुद्धिमता की उनके व्यक्तिगत एंवं सामाजिक चरों के सन्दर्भ में जॉच की। शोधकार्य के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे–:1. शोध में पाया गया अधिकतर किशोरो की संवेगात्मक बुद्धिमता औसत से अधिक तथा औसत पाई गई। 2. जो किशोर संयुक्त परिवारों से आते है उनकी संवेगात्मक बुद्धिमता अधिक पाई गई। 2. जो किशोर बालक बड़े परिवारो से आते है। उनकी ग्रहण करने की क्षमता, तनाव पर नियन्त्रण छोटे परिवार के किशारों की तुलना में काफी अधिक पाया गया। 3. सयुक्त परिवारों में देर से जन्म लेने वाले किशोरों की संवेगात्मक बुद्धिमता तथा कौशल उच्च पाया गया। रीता चोपड़ा तथा पूनम नागरू (2013) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि :– 1.संवेगात्मक बुद्धिमता का पारिवारिक जागरूकता के साथ सहसम्बन्ध है। 2. छात्रों की वचनबद्धता तथा उनके माता–पिता के केन्द्रण में सम्बन्ध है। 3. छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमता का माता–पिता की स्वीकृति से सम्बन्ध सार्थक रूप में पाया गया। बेन्सी एवं नागराजन (2012) ने अपने अनुसंधान में अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धिमता का आत्म प्रत्यय के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन की मुख्य प्राप्तियां इस प्रकार हैः– 1. छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धिमता का उनकी ऐच्छिक विषयों, वैवाहिक स्थिति, माता के पेशे के साथ, मासिक आय, शैक्षिक उपलब्धि तथा परिवार के स्तर के साथ कोई अन्तर नही है। 2. छात्राध्यापाकों की संवेगात्मक बुद्धिमता का पिता के व्यवसाय के सन्दर्भ में कोई अन्तर नही पाया गया। 3. छात्राध्यापकों के सांवेगिक बुद्धिमता एवं उनके आत्म प्रत्य में महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध पाया गया है। कालरा एवं निशा (2012) ने अपने अध्ययन में हरियाणा प्रदेश के सिरसा जिले के स्कूल के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमता और व्यक्तित्व के पांच प्रमुख कारकों पर शाध कार्य किया। इस शोध कार्य की मुख्य प्राप्तियां इस प्रकार रही–1. गैर सरकारी स्कूल के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धिमता सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में अधिक पाई गई। 2. यह भी देखा गया गैर सरकारी स्कूल के छात्रों का व्यक्तित्व सरकारी स्कूल के छात्रों से ज्यादा अच्छा था । 3. बहुमुख व्यक्तित्व वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमता के विभिन्न कारक व्यक्तित्व जागरूकता, अन्तः व्यक्ति जागरूकता में कोई सार्थक सम्बन्ध नही पाया गया। 4. व्यक्तित्व का सचेतना सम्बन्धी कारक संवेगात्मक बुद्धिमता के अन्तः व्यक्ति प्रबन्धन के साथ सकारात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। कुमार एवं पाटिल (2012) द्वारा किये गए शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धिमता का उनकी शैक्षिक योग्यता तथा शिक्षक के स्तर का अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य प्राप्तियां इस प्रकार रहीः– 1. स्नाातक एवं स्नातकोत्तर पढ़े माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की आत्म जागरूकता में संवेगात्मक बुद्धिमता सम्बन्धी कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 2. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पढ़े माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सांवेगिक बुद्धिमता के स्वयं प्रबंधन कारकों में कोई सार्थक अन्तर नही होता। 3. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पढ़े माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के सामाजिक जागरूकता के सांवेगिक बुद्धिमता सम्बन्धी कोई अन्तर नही पाया गया। 4. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पढ़े माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों के प्रबन्धन तथा संवेगात्मक बुद्धिमता में भी कोई सार्थक अन्तर नही देखा गया। महमूद (2012) ने अपने शोध कार्य में किशोर बालकों की संवेगात्मक बुद्धिमता करियर परिपक्वता तथा स्वयं की क्षमता में आपसी सम्बन्ध का अध्ययन किया। शोध के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है– 1. विद्यार्थियों की अच्छी संवेगात्मक बुद्धिमता, आत्मक्षमता तथा करियर परिपक्वता पाई गई। 2. सरकारी विद्यालयों के छात्रों की करियर परिपक्वता का सांवेगिक बुद्धिमता के साथ सहसम्बन्ध पाया गया। 3. सरकारी स्कूल के छात्रों तथा प्राइवेट विद्यालय के छात्रों की करियर परिपक्वता तथ उनके व्यक्तित्व में व्यापक अन्तर पाया गया। 4. सरकारी स्कूल के छात्र व छात्राओं के मध्य भी करियर परिपक्वता तथा व्यक्तित्व व सांवेगिक बुद्धिमता में सार्थक अन्तर पाया गया। 5. प्राईवेट विद्यालय के छात्रों और छात्राओं के मध्य करियर परिपक्वता तथा संवेगात्मक बुद्धिमता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया है। मित्तल (2012) ने अपने शोध कार्य में सेकेण्डरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमता तथा समायोजन स्कूल के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमता तथा समायोजन का अध्ययन किया। शोध कार्य की प्रमुख निष्कर्ष निम्न है'– 1.माध्यमिक स्कूल में पुरूष छात्र, महिला छात्रों की तुलना में जल्दी समायोजन कर लेते है। 2. माध्यमिक स्कूल के छात्रों जिनकी संवेगात्मक बुद्धिमता उच्च है वो छात्र समायोजन में भी अच्छे पाए गये। 3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में उच्च नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया उनके समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धिमता के सन्दर्भ में। 4. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं में सामान्य सहसम्बन्ध पाया गया उनके सांवेगिक बुद्धिमता तथा समायोजन के सन्दर्भ में। यादव (2012) ने अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धिमता तथा मूल्यों का हरियाणा प्रदेश के रिवाड़ी जिलें के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्रों की जॉच की। उन्होने संवेगात्मक बुद्धिमता मापन हेतु मंगल संवेगात्मक बुद्धि परीक्षा तथा व्यक्तितगत मूल्यों के मापन हेतु शेरी तथा वर्मा कृत प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस शोध कार्य के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है–: 1. किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमता का स्तर औसत पाया गया। 2.सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 3. पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

उद्देश्यः

1. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता का लिंग के आधार पर अन्तर का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगात्मक बुद्धिमता का स्थानीयता के आधार पर अन्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनायेंः

1. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्य सांवेगिक बुद्धिमता के आधार पर कोई अन्तर नही है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्य सांवेगिक बुद्धिमता का लिंग के आधार पर कोई अन्तर नही है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के स्थानीयता के आधार पर कोई अन्तर नही है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप मे हरियाणा राज्य के पानीपत जिले जिले के माध्यामिक विद्यालयो के 400 छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

प्रयुक्त सांख्यकीय तकनीक

ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और सह संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया गया था।

शोध उपकरण

अनुकूल हेडे, संजय पेथे और उपिंदर धार द्वारा प्रतिपादित इमोशनल इंटेलीजेन्स प्रश्नावली का मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया था।

विश्लेषण व व्याख्याः

तालिका 1: माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता का लिंग के आधार पर अन्तर का अध्ययन।

परिकलित मूल्य	छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता	छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता
विद्यार्थियों की संख्या	200	200
माध्य	133.91	133.98
मानक विचलन	13.439	12.388
प्रमाप विभ्रम		1.292
'टी' मूल्य		0.19

तलिका 1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता परीक्षण में छात्रों का मध्यमान 133.91 तथा छात्रओं का मध्यमान 133.88 प्राप्त हुआ है। जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 13.439 तथा 12.388 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.19 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य से पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्य सांवेगिक बुद्धिमता का लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है।'' स्वीकार की जाती है तथा कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

तालिका संख्या 2

माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता का स्थानीयता के आधार पर अन्तर का अध्ययन।

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता का लिंग के आधार पर अध्ययनः

तालिका 2

परिकलित मूल्य	छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमता	छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता
विद्यार्थियों की संख्या	234	166
माध्य	133.45	134.52
मानक विचलन	13.371	12.239
प्रमाप विभ्रम		1.290
'टी' मूल्य		0.19

तालिका संख्या 4.3 से सहस्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं की सांवेगिकता में कोई सार्थक अन्तर नही है। तालिका का संख्या 4.3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्र छात्राओं के सांवेगिक बुद्धिमता परीक्षण में प्राप्त अंको के आधार पर ग्रामीण छात्रों का अध्ययन 133.45 तथा शहरी छात्राओं का मध्यमान 12.239 प्राप्त हुआ है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 13.371 तथा 12.239 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.19 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है।

शोध निष्कर्षः

छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धिमता में लिंग और स्थानीयता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही होता है और दोनों के स्तर एक समान है।

शैक्षिक महत्वः

अध्ययन का शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शोध कार्य का शिक्षा से जुड़े हुये विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे शिक्षकों के लिये, प्रशासकों के लिये, छात्रों के लिये, निर्देशकों के लिये तथा अभिभावकों के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। छात्रों में इसमे अन्य बातों के अलावा अपना एवं दूसरो के संवेगो का मूल्यांकन करना, भावो की पहचान करना एवं अभिव्यक्त करना, दिल एवं दिमाग के बीच सन्तुलन बनाये रखना, नम्यता एवं अनुकूलन दिखलाना, दूसरों के विचारो की प्रशंसा करना, तात्कालिक मनोवैज्ञानिक तुष्टि को विलम्बित करने की क्षमता आदि सम्मलित हैं। इस हेतु इस अध्ययन का अत्यधिक महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. भदौरिया प्रीतिख। रोल ऑफ इमोशनल इन्टेलिजैंस फॉर एकेडमिक अचीवमेन्टस फॉर स्टूडैण्टस। रिसर्च जनरल ऑफ एजुकेशनल साईन्स। 2013 1(2):18–12.
2. अग्रवाल, जे0सी0। एजुकेशनल रिसर्च, नई दिल्ली, आर्य बुक डिप्पों, 1986.
3. अग्रवाल वाई0पी0। सटेटिकल मैथड्स, नई दिल्ली, सटरलिंग पब्लिसर, 2000.
4. आलम, मो0 महमूद। इमोनशनल इन्टेलिजैन्स, सेल्फ एफिसियन्स एण्ड कैरियर मैचुरिटी अमन्ग द स्टूडेण्टस ऑफ हैदराबाद। जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाईडेण्स एण्ड रिसर्च। 2012; 29(2):272-273.
5. बैरॉन, राबर्ट, ए0। साईक्लॉजी, नई दिल्ली प्रेन्टिस हॉल ऑफ इन्डिया, 2000.
6. वेस्ट जॉन, डब्लू0 – काहन जे0पी0। रिसर्च इन एजुकेशन (7th

ed.) नई दिल्ली प्रन्टिस हॉल ऑफ इन्डिया, 2004.
7. ओगुनडोकुन, एम0ओ0एण्ड अडेयमों डी0ए0। इमोनशनल इन्टैलिजैनस एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्टसः दि मोडरटिंग इन्फलएन्स ऑफ ऐज, इन्टरल एवं एक्सटरनल मोटिवेशनल नाईजीरिया, 2010.
8. अहद शायमा, अब्दुला, अब्दुल्ला एस0 एवं हसन सौफ द एकेडमिक सकसेस ऑफ यूनाईटेड अरब अमीरात यूनिवर्सिटी स्टूडेण्टस। इन्टरनेशनल एजुकेशन 41 (i) 7.25.
9. अलनाबान माउस। इमोनशनल इन्टिलिजेन्स एज ए प्ररिडिक्टर ऑफ लीडरशीप ऑफ कुवैत हार्ड एण्ड लो अचीविंग 11th ग्रेडरस। गिफटिड एण्ड टेलेन्टिड इन्टरनेशनल। 2010; 25(2):107-110.
10. एन्ड्रयू एम0 कोलमेन। डिक्सनरी ऑफ साईकोलॉजी न्यूर्याकः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 2001.
11. एनाकोडी आर0। इमोशनल इन्टिलिजैन्स ऑफ द स्टूडेन्टस एट हायर सैकेण्डरी लेवल। ग्लोबल रिसर्च एनालिसिस। 2013; 2(9):34-35.
12. कार्टर वी0 गुड। डिक्सनरी ऑफ एजुकेशन, यू0एस0 ए0 मैक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, 1973.
13. कोन्नर ब्रिजिट एण्ड शेरोन एस0। इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड एनजाईटीः इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड रेजीलेन्सी। इन्टरनेशनल जॉरनल ऑफ लर्निंग। 2009; 16(i):249-260.
14. उज्जवला मधुकर। द इफेक्ट ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेन्स डवलपमेन्ट प्रोग्रामस ऑन हायर सैकेण्डरी स्टूडेण्टसः ए स्टडीः अनपब्लिसड पी0एच0डी थीसिस, शिवाजी यूनिवर्सिटीः कोल्हापुर, 2007.
15. एडवर्ड एलन एल0। एक्सपेरिमेन्टल डिजाईन इन साइकोलोजिकल रिसर्च, नई दिल्लीः अमरिन्द पब्लिसिंग क0, 1971.
16. गैरेट हेनरी ई0। स्टेटिकस इन साईकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, नई दिल्ली पैरागान इन्टरनेशल पब्लिशरस, 2007.
17. गोलमैन डेनियल। इमोशनल इन्टेलिजैन्स एण्ड वर्किंग विद इमोशनल इन्टेलिजैन्स, नई दिल्लीः ब्लूमसबरी पब्लिकेशन, 2013.
18. मल्होत्रा, सतीश कुमार। इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्टस ऑफ स्कूल चिल्ड्रन। रिव्यू ऑफ रिसर्च। 2013; 1(6):1-3.
19. लारेन्स ए0एस0, अरूल एण्ड दीपा टी0। इमोशनल इन्टेलिजैन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्टस ऑफ हाई स्कूल स्टूडेण्टस इन कन्याकुमारी डिस्ट्रीक्ट। इन्टरनेशनल जॉरनल ऑफ फिजिकल एण्ड सोशल साईन्स। 2013; 3(2):101-107.
20. लोकेश कौल। मैथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च। नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाउस, 1984.
21. मंगल एस0 के0। इसैन्सियलस ऑफ एजुकेशनल साईकोलॉती, नई दिल्ली प्रन्टिस हॉल ऑफ इन्डिया, 2008.
22. बैरोन आर0 इमोशनल एण्ड सोशल इन्टेलिजैन्स इनसाईट फ्राम द इमोशनल क्यूशेन्ट इनवेटरी, 2000.
23. स्वेतलाना एच0। इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेण्टस इन हायर एजुकेशन पेपरीडाईन यूनिवर्सिटी, 2007.
24. नारायण श्रुति एवं लक्ष्मी विजया। इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्टस ऑफ स्कूल चिल्ड्रन, साईको लिन्गवा (ISSN:03770-3132) 2010; 80-83.
25. भदौरिया प्रीति। रोल ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेन्स फॉर एकेडमिक अचीवमेन्ट फॉर स्टूडेण्टसः रिसर्च जनरल ऑफ एजुकेशनल साईन्स (ISSN2321-0508) 2013; 1(2):8-12.
26. मिश्रा पूनम। ए स्टडी ऑफ इफैक्ट ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेन्स ऑन एकेडमिक अचीवमेन्टस ऑफ जयपूर सीनियर सैकेण्डरी स्टूडेण्टस, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टैक्नालॉजी ISSN0976-4089, 2012; 3:25-28.
27. सुरेश के0जे0 एण्ड जोशटिथ वी0पी0। इमोशनल इन्टेलिजेन्स एज ए कोरिलेट ऑफ स्ट्रेस ऑफ स्टूडेण्टस टीचर्स एजुट्रैक। 2008; 7(12):26-32.
28. विक्किनस डी0। द रिलेशनशिप बिटविन एजुकेशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड इन्रोलटमेण्ट रिटेनसन इन ऑनलाईन एजुकेशन डेजरटेशन एण्ड थिसिस वॉलडन यूनिवर्सिटी, मिनिसोटा (पब्लिकेशन नम्बर एएटी–313854), 2004.
29. चौबे, एस0पी0 मनोविज्ञान और शिक्षा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
30. डा0 माथुर एस0एस0ः शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आर्गरा।
31. डा0 वशिष्ट एण्ड डा0 शर्मा डी0 एल0 ''भारतीय शिक्षण की नई दिशाः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
32. गिल्फोर्ड जे0पी0ः फण्डामेन्टल स्टेटिस्टिक इन साइक्लोजी एण्ड एजुकेशन, मेग्राहिल, नई दिल्ली।
33. गुड़, सी0वी0 स्केट्स डी0ः ''मैथडस रिसर्च'' न्यूर्याक एपलटैन कन्टरी क्राट्स।
34. डा0 जैन एम0के0। शोध विधिया, नई दिल्लीः दिल्ली यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 2007.